Vol II Issue V Nov 2012

Impact Factor : 0.1870

ISSN No :2231-5063

Monthly Multidiciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

IMPACT FACTOR : 0.2105

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Golden Research Thoughts
Volume.2, Issue.5, Nov.2012
ISSN:-2231-5063

Available on all social networks
citeulike

ORIGINAL ARTICLE

GRT

सामाजिक उपन्यासों में चित्रित संस्कार एवं रस्म–रिवाज

पंढरीनाथ महादेवराव वाघमारे

सहायक प्राध्यापक,श्री सरस्वती महाविद्‍यालय, अंबाजोगाई
जि. बीड़ (महाराष्ट्र) ४३१ ५१७

प्रस्तावना

जनजातीय समुदाय की संस्कृति के परिचायक है, उनके द्‍वारा निभाये जानेवाले रस्म–रिवाज एवं संस्कार। रस्म–रिवाज और संस्कार आदिवासी संस्कृति के अभिन्न अंग है। पीढ़ी दर पीढ़ी चले आ रहें रस्म–रिवाजों तथा संस्कारों द्वारा आदिवासियों ने अपनी संस्कृति को सुरक्षित रखा है। रस्म–रिवाजों और संस्कारों द्वारा अपनी परंपरा और संस्कृति का अभिमान बोध जागृत होता है। इन रस्म–रिवाजों और संस्कारों के अवसर पर पारस्पारिक सहयोग, सद्‌भाव, प्रेम एवं सामुदायिकता की भावना को निर्माण होती है। रस्म रिवाजों और संस्कारों का चित्रण 'पार', 'गगन घटा गहरानी', 'अल्मा कबूतरी', 'रेत', 'ग्लोबल गॉव के देवता', 'धूणी तपे तीर', 'बाजत अनहद ढ़ोल' आदि उपन्यासों मे हुआ है।

जीवन में तीन संस्कार महत्वपूर्ण है। जन्म, विवाह और मृत्यु ये तीनों भी संस्कार जीवन को प्रभावित करते है। आदिवासी समुदाय ये तीनों संस्कार मनाता हैं। ''आदिवासियों में बच्चे के जन्म पर खुशियॉ मनाई जाती हैं तथा विवाह पर उत्सव की तरह अपना उल्लास प्रकट किया जाता है! जीवनक्रम में मृत्यू का स्थान सबसे अंतीम हैं।........इसीलिए मृत्यु को शोक संस्कार के रूप में देखा जाता है..........आदिवासी समुदाय भी जन्म, विवाह और मृत्यु के संस्कारों को मनाता है!''[१]

रणेंद्र के 'ग्लोबल गॉव के देवता' उपन्यास में आदिवासी असुर समुदाय में जन्मे बच्चे के नामकरण संस्कार को लेकर उनका विश्वास है कि–''नये जन्मे बच्चे के नामकरण के समय पितर–पूर्वज न केवल याद किए जाते बल्कि विश्वास था कि वें सबके–सब वहीं उपस्थित रहते। दोना के पानी में पूर्वजों के नाम ले–लेकर चावल के दो–दो दानें डाले जाते। जिनके नाम से दानें पडते और डूब जाते तो यह माना जाता है कि वह पितर बच्चे को अपना नाम देने का इच्छुक नहीं। जिनके नाम से डाले गए दानें न केवल पानी में तैरते रहते बल्कि उनकें सिरे भी सट जाते, तो उसी पितर का नाम बच्चे को मिल जाता।''[२]

वीरेंद्र जैन के उपन्यास 'पार' में आदिवासी राउतों कें विवाह संस्कार का चित्रण देखने को मिलता है। राउतों में विवाह संस्कार की अपनी अलग विशे ताएँ है। जिसे ड़ोर बंधाई कहा जाता है। विवाह योग्य युवक और युवतियों को मौंढ़ा और मौंढ़ी कहा जाता है। इनके पारिवारिक जीवन की शुरूवात ड़ोर बंधाई की रस्म से होती है। मुखिया पुरे खेरे में ढ़ोल पीटवाकर ड़ोर बंधाई की सूचना देता है। तत्पश्चात् मुखिया ग्राम देवता गौंड बब्बा के थान पर एक मढ़वा गढ़वाता है। रात के समय पूरा खेरा थान पर इकठ्ठा होता है। वहॉ ढोल के संग–साथ में डोर बंधाई की उम्र पाई मौढ़ा और मैढ़ियन की फेरी फिरवा दी जाती है। मुखिया और गुनिया थान पर मढे मढ़वा के नीचे बिराजते है। मढ़वा के एक ओर मौंढ़े और दूसरी ओर मौंढ़ियन को बीठाया जाता है। मुखिया का आदेश पाकर गुनिया, गौंड बब्बा और मुखिया को प्रणाम कर ढ़ोल बजा–बजाकर वातावरण में जोश भर देता है। फिर हर एक मौंढ़े को ढ़ोल बजाने नियमों से गुजरना पडता है। अगर मौंढ़े के ढ़ोल बजाने की कला पर मौंढ़ी फिदा होकर उसके पास आकर बैठती है, तब उन दोनो के मौंढ़ा व मौढ़ी से जन और जनी बन जाने की घो णा मुखिया द्वारा की जाती है। गुरया और पछिया इस डोर बंधाई के द्वारा ही पति–पत्नी के बंधन में बंध जाते है। जिसका चित्रण उपन्यासकार कुछ इस प्रकार करता है–''गुरया अपनी जगह से उठा। गौंड बब्बा के पथरा पर माथा टेका। मुखिया को प्रणाम किया। गुनिया को प्रणाम किया। ढ़ोल को प्रणाम किया। ढ़ोल उठाया।......और ता–तिड़, ता–तिड़, ता–तिड़, ता–तिड़......सबकी ऑखों में एक ही उत्सुकता...... .तभी पछिया गोल में से उठी। ढ़ोल की थाप पर थिरकती हुई मढ़वा तक आई। गौंड़ बब्बा को माथा टेका। मुखिया को प्रणाम किया। गुनिया को प्रणाम किया। और अंत में गुरया के ऐन सामने आ खडी हुई।......खेरे ने जान लिया गुरया को मन में बसी मौंढ़ी जनी के रूप में मिल गई है।''[३]

मैत्रेयी पु पा के 'अल्मा कबूतरी' उपन्यास में कबूतरा जपजाति के अंतीम संस्कार का चित्रण किया गया है। कबुतराओं में अंतीम संस्कार समय वीर देवता का चबूतरा कुॅआरी लड़की से लिपवाया जाता है। वीरदेवता की पूजा के लिए अगरबत्ती–मोमबत्ती जलाई जाती है। वीरदेवता की मढ़िया कोरे कपडे से बनायी जाती है। आये हुए लोग कॉती से देवता के चबूतरे पर कट्टस का निशान बनाते है मृतक के नाम अमरता के मंत्र पढ़े जाते है। अरथी पर धान–फूल ड़ालकर कपड़ा ओढ़ा जाता है। वारिस अरथी में घंटा सॅभालता है। अंत में चिता जलाई जाती है। कबूतरी कदमीबाई के पति की मृत्यु पर वीरदेवता का कबुतरियों ने सिसक–सिसककर गीत गाया''[४]

प्राय: मुण्डा आदिवासी समुदाय में किसी व्यक्ति की मृत्यु होने पर श्मशान में दाह–संस्कार किया जाता है। किन्तु जिसकी नैसर्गिक मृत्यु नहीं होती, अपितु किसी दुर्घटना में मौत होती है, तब उसका अलग से दाह–संस्कार दिया जाता है। अस्थियॉ चुनकर भारी पत्थर के नीचे गाढ़ दी जाती है। राकेश कुमार सिंह के उपन्यास 'पठार पर कोहरा' में मुंडा रंगेनी का पति होकाना बेचू तिवारी के लकडी के लठ्ठों की लदनी ट्रक में करते समय हाथी द्वारा कुचलने की दुर्घटना में मारा गया था। उसके अंतिम संस्कार के बारे में उपन्यासकार कहता है–''ससान(श्मशन)में नहीं जलाया गया था होकाना। अपनी मौत तो मरा नहीं था। ऐसी देह ससान नहीं जाती। अलग दाह करने के बाद फुल (अस्थियॉ) बीन लिए जाते हैं, फिर उन फुलों को खूब भारी पत्थर के नीचे गाड दिया जाता हैं।''[५]

Please cite this Article as :*पंढरीनाथ महादेवराव वाघमारे*, *सामाजिक उपन्यासों में चित्रित संस्कार एवं रस्म–रिवाजे*: Golden Research Thoughts (Nov; 2012)

वीरेंद्र जैन के आदिवासी राउत समुदाय पर लिखे उपन्यास 'पार' में मुखिया बनाने के रिवाज पर प्रकाश डाला है। राउतों में खेरे का विद्यमान मुखिया अपने जीवित रहते ही उत्तराधिकारी के चुनाव हेतु खेरे की किसी महिला को मुखिया माई के रूप में घोि ात करता है। उसके द्वारा जना मौंढ़ा गुनिया कहलाता है। मुखिया की कोई आस औलाद नहीं होती समस्त खेरा ही उसकी आस औलाद जाना जाता है। वह खेरे का हितू, माई बाप होता है। खेरे के मुखिया ने फुलिया को मुखिया माई घोि ात किया हुआ था। मुखिया माई के मौढ़ा होने की खबर मुखिया तक पहुँचते ही उसने घोि ात कर दिया–'' 'इसका नाम बजेगा गुनिया।' गुनिया का मतलब अगला मुखिया। मुखिया बने पीछे मुखिया का कोई नाम नहीं रहता। जब तक नया मुखिया किसी को गुनिया नहीं चुनता, गुनिया भी किसी का नाम नहीं बजता। जो गुनिया चुन लिया जाता है उसका भी कोई नाम नहीं बजता। जब तक गुनिया रहता है तब तक वह गुनिया के नाम से जाना जाता है, फिर मुखिया बनने पर मुखिया के नाम से।''[६]

आदिवासी उरॉव समुदाय में करमा पर्व में एक रिवाज पाया जाता है, कोई उरॉव लड़का किसी लड़की से प्रेम कर बैठता है तो वह करमा पर्व के दूसरे दिन अपनी प्रेमिका को उसके घर से भगा ले आता है, और वह आपने प्रेम का इजहार करता है। मनमोहन पाठक के उपन्यास 'गगन घटा गहरानी' की बिफनी को चिन्ता हो गई है कहीं ऐसा न हो कि सोनाराम हीरामनी को भगाकर मुरहू न चल दे। उपन्यासकार इस रिवाज का चित्रण करते हुए कहता है–''करमा के दिनों ऐसा ही होता है। एक–एक दिन एक–एक गॉव दूसरे गॉव जाता है। खूब दारू–हॉड़िया चलती है। कल लुपूंगा के लोग लाते जाएँगे। ऐसे में ही प्रेमी दूसरे गॉव से अपनी प्रेमिका को भगाकर ले आता हैं।''[७]

बुंदेलखंड की कबूतरा जनजाति में एक रिवाज पाया जाता है। अगर किसी के बच्चें जन्म के बाद ज्यादा दिन तक जीते नहीं, बचपन में ही उनकी मृत्यु होती है, ऐसे बच्चों की लंबी आयु हो इसलिए दूसरों के बच्चों के कपड़े पहनाकर बच्चों का पालन पो ाण किया जाता है। 'अल्मा कबूतरी' की कदमीबाई इस रिवाज के बारे में कहती है–''हमारे यहाँ एक अच्छा रिवाज है, जिसके बच्चें नहीं जीते, वे अपने नन्हों को दूसरों के कपड़े पहनाकर पालते हैं। बालक जिन्दा रह जाते है।''[८]

कबूतरा जनजाति में एक रिवाज पाया जाता है, अगर डेरे में किसी की मृत्यु हुई तो उसकी मृत्यु पर रो कर शोक नहीं मनाया जाता। कदमीबाई के पति जंगलिया की मौत पर कदमीबाई और भजनी जिठानी रोने लगी तब डेरे का मुखिया सरमन कहने लगा–''री, भजनी, देवर की मौत पर रो रही है! बूढ़ी होने को आई, बिरादरी का कायदा भूल गई। मौत पर कौन रोता है हमारे यहाँ?तुझे गेहूँ की रोटी खिला गया सो कज्जिन की तरह फूट पड़ी।''[९]

भगवानदास मोरवाले के कंजर जनजाति पर लिखे उपन्यास 'रेत' में सगाई की रस्म का चित्रण किया है। कंजरों की सगाई में लड़केवालों द्वारा वधु पक्ष को दहेज देना पड़ता है। जो रक्कम तय की जाती है उसमें से कुछ रकम छोरी रूकाई के रूप में अदा करनी पडती है। सगाई की रस्म में लड़की के मामा का अहम महत्व होता है। सगाई की रस्म के बाद खान–पान होता है जब तक पहले तोड़ की शराब ग्रहण नहीं की जाती तब तक सगाई की रस्म पूरी नहीं होती। सुशीला के लड़के मंगल और सिकंदर की भतीजी संतो की सगाई की रस्म को निम्न पंक्तियों मे चित्रित किया है–''लडकी को बुलवा लिया गया। बुआ ने जेब से एक–एक के दो चॉदी के सिक्के और हल्दी की गॉठ निकाली......बुआ के निर्देश का पालन करते हुए बैद्यजी ने पास में रखे बट्टे को उठाया और दोनों सिक्कों के बीच हल्दी की गॉठ रख सावधानी से उसे कूटने लगा......बैद्जी ने हल्दी कटोरी में घोली और उसे बुआ को दे दिया।.......बुआ ने अपनी होनेवाली वधू के हाथों और पॉवों में हल्दी का घोल लगाते हुए सगाई की रस्म पूरी कर दी।''[१०]

झारखंड के आदिवासी असूर समाज में सहिया जुड़ाने का रिवाज है। सहिया जोड़ना याने मित्रता की विधिवत घो णा। सहिया जोड़नेवालों को आपस में एक–दूसरे को अपनी पसंदीदा चीज देनी होती है। रणेंद्र के उपन्यास 'ग्लोबल गॉव के देवता' में आदिवासी असुर समुदाय की ललिता और भौरापाट के मास्टर जी से सहिया जुड़ने का चित्रण हुआ है। सहिया जोड़ने के लिए ललिता ने अपनी और से रेडिमेड शर्ट खरीदकर मास्टर जी को भेंट किया। मास्टर जी ने अपनी ओर से ललिता को सलवार सूट का कपड़ा तथा पेन खरीदकर उपहार स्वरूप में दिया। फिर दोनों ने एक दुसरे को रिवाज के मुताबिक गुलईची का फूल भेंट किया। सारे गॉव में लड़के–लड़कियों ने खा–पीकर रात भर मॉदर की थाप में झुमर नृत्य–गान किया। ललिता और भौरापाट के मास्टर जी से सहिया जुड़ने के अवसर पर लालचन दा ने कहा–''लड़का–लड़का और लड़की से लड़की का सहिया जोडाये तो देखते–सुनते आये। अब ललिता नया विधि–विधान, परंपरा शुरू कर रही है। लेकिन अच्छा है। सहिया भी चुनी है तो अपने जैसा किताबी कीड़ा। दिन–रात आकाश में ताकनेवाला बढ़िया है।''[११]

आदिवासी भीलों के 'मौताना' मॉगने के रिवाज का चित्रण हरिराम मीणा के उपन्यास 'धूणी तपे तीर' में हुआ है। गोविन्द गुरू के शि य धर्मा भगत और लक्ष्मणपुरा के जस्सूभाई पटेल में भीतर ही भीतर सम्प सभा को लेकर रंजिश थी। इसी के चलते जस्सू पटेल और जागीरदारों ने मिलकर धर्मा भगत की हत्या कर लाश को जंगल में फेंक दिया, ऐसा सन्देह लक्ष्मणपुरा के आदिवासी भीलों को था। इस पर भीड़ इकठ्ठा हो जाती है। भीड़ में से एक भील बोलता है–''लाश को उठाओ, और जस्सूभाई पटेल के घर के सामने रख दो। उसे मौताना का फैसला करना ही होगा........पटेल जस्सूभाई या तो हत्यारों को सामने लायेगा, नहीं तो उससे मौताना लेना होगा''[१२] मौताना का मतलब आर्थिक हर्जाना। यह हर्जाना स्थानीय आदिवासियों के गमेती और अन्य पंच तय करते हैं। मौतना वह देता है, जिस पर हत्या का पक्का सन्देह किया जाता है। उस व्यक्ति ने मौताना नहीं दिया तो लाश को हत्यारे या उस संदिग्ध परिवार के घर में दफना दिया जाता और फिर उस घर में आग लगा दी जाती है।

मधुकर सिंह के उपन्यास 'बाजत अनहद ढोल' में झारखंड के संथाल आदिवासी समाज की गुॅदना संस्कृति के दर्शन होते है जिसमें गुॅदना गुदवाने के रिवाज का चित्रण हुआ है। इस उपन्यास की–''युवतियॉ गोदना को शुभ मानती हैं। गोदना पर इन्हें नाज रहता है। गोदना को इस लोक का श्रृंगार और परलोक का सहारा मानती है। परलोक में गोदना देखकर कीडे इन्हें नहीं काटते हैं।''[१३]

आदिवासियों के संस्कार और रीति–रिवाजों की अपनी अलग विशे ताएँ है, जिनको उपरोक्त प्रकार से देखा जा सकता है। संस्कार और रीति–रिवाज आदिवासियों में एक दूसरे के प्रति आत्मीयता की भावना निर्माण करते है। अपने और साथियों के सुख–दुख में शरीक होकर एक दुसरे के प्रति अमिट स्नेह और प्रेम का परिचय देते है, साथ अपनी संवेदनशीनता और सामाजिक होने का परिचय भी।

संदर्भ संकेत

1.सं. हरिनारायण दत्त, 'आदिवासी स्वर संस्कार और प्रथाएँ' पृ. २७, आकृति प्रकाशन, शहादरा, दिल्ली, सं. २००५

२ .रणेंद्र, 'ग्लोबल गॉव के देवता', पृ. २८–२९, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली, द्वि. सं. २०१०

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net